एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 02 (फरवरी, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

फरवरी - मार्च माह में करें कद्दू वर्गीय सब्जियों की बिजाई व रोपाई

*विकास कुमार, अमीषा, इंदु अरोड़ा, देवेन्द्र सिंह, मक्खन लाल एवं दीक्षित
सब्जी विज्ञान विभाग, सी. सी. एस. एच. ए. यू., हिसार, हरियाणा, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vikaskamboj7005@gmail.com

फरवरी से मार्च माह तक कद्दू वर्गीय विभिन्न सब्जियों की वैज्ञानिक तरीके से खेती कर अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। मुख्य रूप से कद्दू वर्गीय सब्जियों में घिया, कद्दू, चिकनी व धारीदार तोरी, पेठा, करेला, खरबूजा, तरबूज, गोल चप्पन कद्दू और खीरा प्रमुख रुप से उगाई जाती हैं। इन फसलों को खुले खेतों में सीधे बोया जा सकता है या नर्सरी विधि अपनाकर पौध तैयार कर उसकी रोपाई की जाती है। यदि कद्दू वर्गीय सब्जियों की खेती के दौरान कुछ अहम बातों का ध्यान रखा जाए तो कम खर्च में रोग मुक्त फसल अधिक पेदावार प्राप्त की जा सकती है। वैज्ञानिक विधियों को सफलतापूर्वक अपनाने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न प्रकार की बेल वाली सब्जियों की खेती में उन्नत शंकर प्रजातियों का उपयोग किया जाए। बेलवाली सब्जियों की सभी उन्नत शंकर प्रजातियाँ लगभग 60 से 70 दिन में तैयार हो जाती हैं।

कद्दू वर्गीय सब्जियों की किस्में

1. घिया – पूसा समर प्रोलिफिक राउंड, पूसा समर प्रोलिफिक लौंग, घिया हिसार 22, हिसार घिया शंकर 35।
2. करेला – पूसा दो मौसमी, हिसार करेला 127, कोयंबटूर लौंग।
3. खरबूजा – पंजाब सुनहरी, हरा मधु, पूसा शरबती, पूसा मधुरस, दुर्गापुरा मधु।
4. कद्दू पेठा – पूसा विश्वास, अर्का चन्दन, पूसा विकास।
5. चिकनी तोरी – पूसा चिकनी, पूसा सुप्रिया, पूसा प्राजक्ता।
6. काली तोरी – पूसा नसदार, सतपुतिया, पंजाब सदाबहार, पी के एम 1।
7. टिंडा – बीकानेरी ग्रीन, हिसार सलेक्शन, हिसार टिंडा।
8. तरबूज – चार्ल्सटन ग्रे, शुगर बेबी, पूसा बेदाना, दुर्गापुरा मीठा।
9. खीरा – जापानीज लौंग ग्रीन, पूसा संयोग, सोलन हाइब्रिड, के 75।
10. चप्पन कद्दू – पंजाब चप्पन कद्दू, पूसा अलंकार आदि।

प्लास्टिक मल्च का प्रयोग

वर्तमान ठंड के मौसम में, प्लास्टिक लो टनल विधि अपनाकर पौधों को कोहरे और पाले से बचाया जा सकता है। इस तकनीक की मदद से किसान अगेती फसल की बेहतर गुणवत्ता प्राप्त कर सकते हैं तथा फसल को मंडी में अधिक दाम पर बेचकर अच्छा लाभ कमा सकते हैं। पौधरोपण से पूर्व, बेडों (बेड्स) की सतह को हल्की ढलान वाली बनाना चाहिए, जिससे टपका (ड्रिप) सिंचाई प्रणाली द्वारा पानी और रासायनिक खादों के साथ पौष्टिक तत्व आसानी से पौधों की जडों तक पहुँच सकें।

बीजों की बुवाई और पौध रोपण की विधि

बीजों की बुवाई ऊँची क्यारियों (बेड्स) पर करनी चाहिए, जिनकी आपस में दूरी लगभग 2 मीटर हो, जबकि पौधों के बीच की दूरी 60 सेंटी मीटर होनी चाहिए। इन क्यारियों के बीच बनाई गई नालियों की गहराई लगभग 20–30 सेंटीमीटर रखी जानी चाहिए। बीजों की बुवाई नाली के दोनों सिरों पर की जाती है। बुवाई के समय खेत में पर्याप्त नमी होना आवश्यक है, जिससे बीजों का अच्छा अंकुरण सुनिश्चित हो सके। जो किसान कद्दू वर्गीय सब्जियों की पौध तैयार कर उसकी रोपाइ करते हैं, उनके लिए बेड के सेंटर से लेकर दूसरे बेड के सेंटर तक का अंतर लगभग 1–1.5 मीटर का रखना चाहिए। पौधों की रोपाई क्यारियों के बीच में 60 सेंटीमीटर की दूरी पर की जाती है, और पौधे से पौधे के बीच का अंतर भी 60 सेंटी मीटर होना चाहिए। साथ ही, क्यारियों की ऊँचाई लगभग 30–45 सेंटी मीटर रखी जानी चाहिए।

सूक्ष्म सिंचाई एवं फर्टिगेशन

प्लास्टिक के पाइप व नोजल के माध्यम से बूँद – बूँद करके पानी को सीधा पौधों की जड़ों में दिया जाता है। इस प्रकार से 30 से 50 प्रतिशत तक पानी की बचत हो जाती है। टपका सिंचाई खरपतवार व हानिकारक कीड़े – मकोड़ों की रोकथाम में भी सहायक है। ड्रिप प्रणाली को सही रखने एवं खाद के उचित प्रयोग के लिए फर्टिगेशन का प्रयोग ड्रिप के सुरु एवं अंत में न करे। उदाहरण के तौर पर अगर ड्रिप सिंचाई 2 घंटे करनी है तो पहले 1 घंटा सादा पानी, फिर 45 मीनट खादयुक्त पानी एवं अंत में 15 मीनट फिर सादा पानी चलाना चाहिए। ड्रिप सिंचाई के साथ घुलनशील पोषक तत्वों जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटास देने से पैदावार में बढ़ोतरी होती है।